महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

समाज विज्ञान में शोध प्रविधि कार्यशाला का समापन
कल्याण के लिए हो शोध -कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

वर्धा दि. 21 जनवरी 2015: शोध के माध्यम से नई सोच विकसित होनी चाहिए और परिवर्तन की नई दिशा मिलनी चाहिए। समाज विज्ञान में होने वाले शोध का लाभ समाज के कल्याण लिए होना चाहिए। उक्त आशय के विचार कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने व्यक्त किये।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के तत्वावधान में 10 जनवरी से 19 जनवरी तक समाज विज्ञान में शोध प्रविधि कार्यशाला का आयोजन किया गया। सोमवार को कार्यशाला के समापन पर सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलपति बोल रहे थे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में दत्ता मेघे आयुविज्ञान संस्थान के सलाहकार तथा एमसीआई की अकादमिक समिति के अध्यक्ष प्रो. वेद प्रकाश मिश्र उपस्थित थे। मुंबई विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान विभाग के प्रो. पी. जी. जोगदंड, प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र तथा महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी शांति अध्ययन केंद्र के निदेशक तथा पाठ्यक्रम निदेशक प्रो. मनोज कुमार

मंचासीन थे।

दस दिवसीय कार्यशाला में 13 राज्यों के 20 विश्वविद्यालयों के शोधार्थी उपस्थित हुए थे। इसके अलावा विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के पीएच.डी. शोधार्थियों ने इस कार्यशाला में सहभागिता की। समापन पर सभी प्रतिभागियों को कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र, प्रो. वेद प्रकाश मिश्र तथा प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र के द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किये गए।

कुलपति प्रो. मिश्र ने कहा कि सामाजिक अनुसंधान एक जटील समस्या होती है। हर मनुष्य की सोच अलग-अलग होती और ऐसे में उसका अनुसंधान पर भी प्रभाव पडता है। हमें शोध को समग्रता में देखना चाहिए और उसे अधिक से अधिक कल्याणकारी बनाने की दिशा में कार्य करना चाहिए।

प्रो. वेद प्रकाश मिश्र ने विज्ञान और समाज विज्ञान में शोध के अंतर को स्पष्ट करते हुए दोनों की समानताएं और असमानताएं आदि को व्याख्यायित किया। उन्होंने कहा कि स्तरीय अनुसंधान के लिए उसे अपने करिअर का एक हिस्सा बनाना चाहिए। हमें केवल करिअर बनाने के लिए ही रिसर्च नहीं करना चाहिए। विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित प्रो. पी. जी. जोगदंड ने कहा कि समाज विज्ञान में किए जाने वाले अनुसंधान का उपयोग समाज के लिए हो और ऐसे अनुसंधान में यह एक अनिवार्य शर्त होनी चाहिए। ज्ञान एक शक्ति है और इस शक्ति का अनुसंधान के लिए अपडेटीकरण होना जरूरी है। प्रारंभ में स्वागत वक्तव्य प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने दिया।

उन्होंने कहा कि ज्ञान एक अनवरत प्रक्रिया है। शोध प्रविधि जैसी कार्यशाला के माध्यम से विविक जागरण का काम किया जाता है। कार्यशाला में चित्रलेखा अंशु समेत प्रतिनिधियों ने अपने मंतव्य दिये। सहायक प्रोफेसर डॉ. शंभू जोशी ने कार्यशाला की रिपोर्ट प्रस्तुत की। संचालन पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. मिथिलेश ने किया। समापन समारोह में प्रो. सुरेश शर्मा, प्रो. अनिल कुमार राय, प्रो. अरविंद कुमार झा, प्रो. विजय कौल, डॉ. रामानुज अस्थाना, बी. एस. मिरगे आदि सहित शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।